NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

स्ट्रॉबेरी की खेती: उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए आय का एक अभिन्न स्रोत

सत्येंद्र वर्मा, अंकित कुमार मौय एवं अनुज्ञा वर्मा

परिचय:

स्ट्रॉबेरी एक ऐसा फल है जिससे हम सभी भली–भांति परिचित हैं। स्ट्रॉबेरी में कई जरुरी पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हमारे सेहत के लिए जरुरी हैं। स्ट्रॉबेरी की बढ़ती कीमत और मांग की वजह से किसानों की रूचि स्ट्रॉबेरी की खेती की ओर बढने लगा है। स्ट्रॉबेरी एक महत्वपूर्ण नरम फल है, जिसको विभिन्न प्रकार की भूमि तथा जलवायु में उगाया जा सकता है। यह पॉलीहाउस के अंदर और खुले खेत दोनों जगह हो जाता है। इसका पौधा कुछ ही महीनों में फल दे सकता है। इस फसल का उत्पादन बहुत लोगों को रोजगार दे सकता है। स्ट्रॉबेरी दूसरे फलों के मुकाबले जल्दी आमदनी देता है। यह कम लागत और अच्छे मूल्य का फल है। स्ट्रॉबेरी एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन सी, विटामिन बी–१, बी–२ नियासिन, प्रोटीन और खनिजों का एक अच्छा प्राकृतिक स्रोत है। इसमें मिनरल्स भरपूर मात्रा में होते हैं।

स्ट्रॉबेरी की खेती व्यावसायिक तौर पर ठंडे इलाकों में की जाती है जैसे–नैनीताल, देहरादून, हिमाचल प्रदेश, महाबलेश्वर, महाराष्ट्र, नीलगिरी, दार्जिलिंग आदि। परंतु उत्तर प्रदेश के उप उष्णकटिबंधीय जलवायु मे भी इसकी खेती व्यावसायिक तौर पर की जा सकती है जो बुंदेलखंड क्षेत्र के झांसी जिले की रहने वाली गुलरीन चावला ने अपनी पाँच एकड़ भूमि पर और बाराबंकी जिले के राजेश कुमार ने अपने पॉलीहाउस मे यह कर दिखाया है।

उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक शहर झाँसी की रहने वाली गुलरीन चावला ने हमेशा कृषि के माध्यम से अपने समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव डालने का सपना देखा था। वह इस क्षेत्र के शुष्क भूमि को अवसर के रूप मे उपयोग कर हरे–भरे बगीचों में बदलने के लिए दृढ़ संकल्प थी। अविश्वसनीय दृढ़ संकल्प और स्ट्रॉबेरी की खेती करने की दृष्टि के साथ, गुलरीन ने एक ऐसी यात्रा शुरू की जो इस क्षेत्र के लोगों के आय के स्रोत के साथ–साथ उनको भी प्रेरित करेगी। झांसी, जो अपने अत्यधिक तापमान और जल संसाधनों तक सीमित पहुंच के लिए जाना जाता है, पारंपरिक कृषि पद्धतियों के लिए सबसे अनुकूल वातावरण नहीं था। हालाँकि, गुलरीन का मानना था कि सही ज्ञान, समर्पण और नवीन तकनीकों के साथ, वह इन चुनौतियों से पार

सत्येंद्र वर्मा, शोध–छात्र, फल विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय
अंकित कुमार मौर्य, शोध–छात्र, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उ.प्र. –२१०००१
अनुज्ञा वर्मा, शोध–छात्रा, वनस्पति विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
डा. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, फैजाबाद, उ.प्र. –२२४००१

पा सकती थी। उनका पहला कदम स्ट्रॉबेरी की खेती के बारे में खुद को शिक्षित करना था। गुलरीन ने कृषि कार्यशालाओं में भाग लिया, किताबें पढ़ीं और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों से जुड़ीं तथा विभिन्न खेती तकनीकों, मिट्टी की आवश्यकताओं और जल प्रबंधन रणनीतियों के बारे में सीखा। इस नए ज्ञान के साथ गुलरीन ने अपना महत्वाकांक्षी उपक्रम शुरू किया। उन्होंने झाँसी के बाहरी इलाके में एक छोटे से भूखंड को अपने शुरुआती बिंदु के रूप में पहचाना, जहाँ मिट्टी रेतीली थी और उसमें आवश्यक पोषक तत्वों की कमी थी। उनका मानना था कि सही संशोधन के साथ, वह बंजर भूमि को स्ट्रॉबेरी के फलने–फूलने के लिए उपजाऊ भूमि में बदल सकती हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि कैस रूस बनाम यूक्रेन युद्ध और कोविड–19 महामारी के कारण यूरिया की उपलब्धता में कमी आयी है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में उर्वरकों की कीमतें बढ़ गयी है और सरकार उर्वरकों पर सब्सिडी देकर कम दामों में उपलब्ध करवाता है जिससे अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है परन्तु नैनों यूरिया के उपयोग से सब्सिडी की बचत होगी।

गुलरीन ने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करते हुए जैविक खेती के तरीकों को लागू करने का फैसला किया। उसने खाद बनाने और मिट्टी को समृद्ध करने के लिए कार्बनिक पदार्थों का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके अतिरिक्त, उसने पानी के उपयोग को अनुकूलित करने और अपव्यय को कम करने के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित की। इन स्थायी प्रथाओं ने न केवल संसाधनों का संरक्षण किया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि स्ट्रॉबेरी उच्चतम गुणवत्ता वाली होगी। गुलरीन को स्थानीय किसानों से संदेह का सामना करना पड़ा, जो उसके अपरंपरागत तरीकों पर संदेह कर रहे थे। हालांकि, वह जैविक खेती के लाभों और स्ट्रॉबेरी की खेती की संभावित लाभप्रदता के बारे में उन्हें शिक्षित करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाती रहीं। जैसे–जैसे स्ट्रॉबेरी के पौधे जड़ लेने लगे और बढ़ने लगे, गुलरीन का दृढ़ संकल्प रंग लाने लगा। जीवंत लाल स्ट्रॉबेरी उभरने लगे, हवा को मीठी सुगंध से भर दिया। गुलरीन की सफल खेती की खबर पूरे झांसी और आस–पास के इलाकों में जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग गुलरीन की इस उपलब्धि से चकित थे और इस खेती के तरीकों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे। गुलरीन ने आगंतुकों का स्वागत किया और अपने ज्ञान और अनुभवों को साझा करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया। उनका छोटा सा खेत महत्वाकांक्षी किसानों, छात्रों और यहां तक कि सरकारी अधिकारियों के लिए प्रेरणा और सीखने का केंद्र बन गया।

गुलरीन की स्ट्रॉबेरी की खेती का प्रभाव आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्रों से परे चला गया। इसने झांसी के लोगों में गर्व और एकता की भावना को बढ़ावा दिया। कभी सूखी भूमि अब आशा और संभावना से खिल उठी थी। स्थानीय किसानों ने स्थायी कृषि में मूल्य को पहचानते हुए जैविक खेती के तरीकों को अपनाना शुरू किया। गुलरीन की

सफलता ने सरकारी एजेंसियों और कृषि अनुसंधान संस्थानों का भी ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इस क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की खेती की क्षमता को पहचाना और अपने कार्यों को और विस्तारित करने के लिए संसाधनों और धन की पेशकश की। गुलरीन ने इस सहायता का उपयोग उन्नत प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और विकास में निवेश करने के लिए किया। उसने पैदावार को अधिकतम करने, बढ़ते मौसम का विस्तार करने और स्ट्रॉबेरी की खेती को और भी टिकाऊ बनाने के लिए नए तरीकों का पता लगाने का लक्ष्य रखा। गुलरीन चावला ने अपने दृढ़ संकल्प और जुनून से न केवल अपने सपने को हकीकत में बदला बल्कि झांसी के कृषि परिदृश्य को भी बदल दिया। स्ट्रॉबेरी की उनकी सफल खेती ने न केवल किसानों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान किए बल्कि पर्यावरण प्रबंधन और सामुदायिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दिया। गुलरीन की कहानी इस क्षेत्र लोगों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है, और लोगों को प्रेरित करती है कि दृढ़ संकल्प और नवीनता के साथ, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को भी दूर किया जा सकता है।

इसी तरह से बाराबंकी के श्री राजेश कुमार, फसल की कम पैदावार और अप्रत्याशित मौसम की स्थिति की चुनौतियों का सामना करते हुए, उन्होंने वैकल्पिक फसलों की खोज शुरू की जो आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान कर सके। प्रदेश के अन्य हिस्सों की सफलता की कहानियों से प्रेरित होकर, राजेश ने भी छोटे पैमाने पर स्ट्रॉबेरी की खेती करने का फैसला किया। उन्होंने व्यापक शोध के साथ–साथ कार्यशालाओं में भाग लिया और कृषि विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लिया। बाराबंकी की जलवायु स्ट्रॉबेरी उगाने के लिए अनुकूल नहीं थी, क्योंकि यह आमतौर पर ठंडे तापमान में उगाई जाती है। राजेश ने फसल के लिए आदर्श वातावरण बनाने के लिए छायादार जाल लगाने और ड्रिप सिंचाई का उपयोग करने जैसी नवीन तकनीकों को अपनाया। उन्होंने स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल स्ट्रॉबेरी की विभिन्न किस्मों के साथ भी प्रयोग किया। उन्होंने उपभोक्ता वरीयताओं को मापने के लिए सर्वेक्षण किया और स्थानीय किराना स्टोर, रेस्तरां और जूस निर्माताओं सहित संभावित खरीदारों की पहचान की। अपनी उपज में अंतर करने के लिए, उन्होंने रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से परहेज करते हुए जैविक कृषि पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया।

राजेश ने अपनी स्ट्रॉबेरी के लिए बाजार में मांग पैदा करने के महत्व को पहचाना और जैसे–जैसे उनकी स्ट्रॉबेरी की मांग बढ़ी, राजेश को अपने खेती का विस्तार करने की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने पड़ोसी किसानों के साथ साझेदारी की जो अपनी फसलों में विविधता लाने के इच्छुक थे। इस सहयोग ने उन्हें खरीदारों के साथ बेहतर सौदे करने, बेहतर बुनियादी ढांचे तक पहुंचने और सामूहिक रूप से चुनौतियों से पार पाने की अनुमति दी। राजेश की उद्यमशीलता की भावना ने उन्हें स्ट्रॉबेरी से प्राप्त मूल्यवर्धित उत्पादों का पता लगाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जैम, जेली और सॉस बनाना शुरू किया, जिससे न केवल उनकी

आय में वृद्धि हुई बल्कि अतिरिक्त फलों की बर्बादी भी कम हुई। राजेश सक्रिय रूप से स्थानीय समुदायों के साथ जुड़े हुए है, तथा लोगों को स्ट्रॉबेरी के स्वास्थ्य लाभों और उन्हें आनंद लेने के विभिन्न तरीकों के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रेरित रहते है। बाराबंकी में स्ट्रॉबेरी की खेती की संभावना को देखते हुए, राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में आने वाले किसानों के लिए सब्सिडी और सहायता कार्यक्रम शुरू किए।

राजेश ने इन सरकारी योजनाओ का लाभ उठाया, जिससे उन्हें उन्नत कृषि उपकरण, कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं और विपणन पहलों में निवेश करने में मदद मिली। उनकी सफलता की कहानी ने कृषि अधिकारियों का भी ध्यान आकर्षित किया, और उन्हें अपनी प्रतिष्ठा को और बढ़ाने के लिए सेमिनारों और सम्मेलनों में अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया। राजेश की सफलता का समुदाय पर प्रभाव पड़ा। उनकी उपलब्धियों से प्रेरित होकर, बाराबंकी में कई अन्य किसानों ने इसका अनुसरण किया और स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू कर दी। इससे न केवल उनके लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न हुई बल्कि जिले के समग्र विकास में भी योगदान दिया। बढ़ी हुई आर्थिक गतिविधियों ने नौकरियों के निर्माण, बेहतर बुनियादी ढांचे और कृषक समुदाय के बीच आशावाद की एक नई भावना पैदा की।

➢ **लक्ष्य:**

इस लेख का लक्ष्य स्ट्रॉबेरी की खेती के लाभ और उत्पादन की विधियों को समझाना है। हम इसके माध्यम से किसानों को स्ट्रॉबेरी की खेती के प्रति जागरूकता प्रदान करना हैं।

➢ **उद्देश्य:**

१. स्ट्रॉबेरी की खेती के लाभों को समझना।

२. स्ट्रॉबेरी की खेती की विधियों को समझना और विस्तार करना।

३. किसानों को स्ट्रॉबेरी की खेती में सफलता के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करना।

विधियाँ: स्ट्रॉबेरी की उत्पादन के लिए निम्नलिखित विधियाँ अनुसरण की जाती हैं:

➢ **जमीन का चयन:**

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए सुनहरे और धुले हुए मिट्टी का चयन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिट्टी को गहरा, उचित निस्तारण और अच्छी द्रवता प्रदान करने वाला होना चाहिए। स्ट्रॉबेरी के लिए उपयुक्त मिट्टी की प्रमुख विशेषताएं हैं अच्छी सतही, मानसूनी मिट्टी जिसमें पानी जमा नहीं होता है, गहराई में कम से कम ६ इंच और उचित ड्रेनेज सिस्टम होना।

➢ **बीजों का चयन:**

स्ट्रॉबेरी की खेती में उपयुक्त बीजों का चयन करना आवश्यक होता है। उच्च गुणवत्ता वाले, स्थानिक प्रदर्शन में अच्छे और उत्पादक बीजों का चयन करें। बीजों का चयन करते समय पौधों की रोग प्रतिरोधीता, उपज की मात्रा, आकार और गुणवत्ता ध्यान में रखना चाहिए।

➢ **देखभाल:**

स्ट्रॉबेरी पौधों की देखभाल के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जाते हैं:

- पौधों को नियमित तौर पर पानी देना और सभी जलस्रोतों को सुनिश्चित करना।
- उचित रौशनी के लिए पौधों को वायुमंडलीय शर्तों में रखना।
- जड़ी–बूटी संख्या और ग्रहण की जांच करना और अगर आवश्यक हो तो कीटनाशक का उपयोग करना।
- वृद्धि पाठ को नियमित रूप से हटाना।
- पर्याप्त पोषण देने के लिए उचित खाद का उपयोग करना।

➢ जलवायु और मृदा

स्ट्रॉबेरी की खेती किसी भी उपजाऊ मिट्टी में की जा सकती है द्य किन्तु बलुई दोमट मिट्टी में स्ट्रॉबेरी का उत्पादन अधिक मात्रा में प्राप्त होता है द्य इसकी खेती में भूमि का पी–एच मान ५.५ से ६.५ के मध्य होना चाहिए। स्ट्रॉबेरी का पौधा ठंडी जलवायु वाला होता है, मैदानी क्षेत्रों में इसकी फसल आसानी से की जा सकती है। इसके पौधों को अच्छे से विकास करने के लिए २० से ३० डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, तथा अधिक तापमान होने पर पौधों हो विकास करने में दिक्कत होती है।

➢ स्ट्रॉबेरी की उन्नत किस्में

उत्तर प्रदेश में स्ट्रॉबेरी की कुछ ही उन्नत किस्मों को उगाया जा सकता है, जिन्हे अलग–अलग क्षेत्रों के हिसाब से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है। उन्नत किस्में इस प्रकार हैः–

- ब्लैक मोर
- सिसकेफ
- फेयर फाक्स
- ओफ्रा
- कमारोसा
- एलिस्ता
- स्वीट चार्ली
- चांडलर

➢ स्ट्रॉबेरी के खेती की तैयारी एवं उवर्रक

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए भुरभुरी मिट्टी की जरूरत होती है। इसके लिए खेत की गहरी जुताई कर दी जाती है। पहली जुताई के पश्चात खेत में ७५ टन पुरानी सड़ी गोबर की खाद को प्रति एकड़ के हिसाब से खेत में देना होता है। इसके बाद खेत की अच्छी तरह से जुताई कर गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छी तरह से मिला दिया जाता है। इसके बाद खेत में पानी लगा देते है, जब खेत का पानी सूख जाता है, तो उसकी फिर से जुताई कर दी जाती है। जब इस खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाती है इसके बाद खेत में पाटा लगाकर खेत को समतल कर दिया जाता है। स्ट्रॉबेरी की खेती में रासायनिक खाद के रूप में ६० किलोग्राम पोटाश और १०० किलोग्राम फास्फोरस की मात्रा को प्रति एकड़ के हिसाब से खेत की आखरी जुताई के समय देना होता है।

➢ पौध रोपाई के लिए बेड की तैयारी

स्ट्रॉबेरी के पौधों की रोपाई के लिए खेत में बेड की तैयारी की जाती है। इसके लिए खेत में डेढ़ फीट की दूरी रखते हुए दो फुट चौड़े बेड तैयार कर लिए जाते है। इसके पश्चात् ड्रेप एरिगेशन की पाइपलाइन को बिछा दिया जाता है, और पौधों को लगाने के लिए २० से ३० सेंटीमीटर की दूरी पर पाइप में छेदो को बना लिया जाता है। इसके बाद पौधों की रोपाई कर दी जाती है। पौध रोपाई के लिए १० सितम्बर से १५ अक्टूबर के मध्य का समय अच्छा होता है, तथा तापमान अधिक होने पर पौधों को सितम्बर के अंत तक भी लगाया जा सकता है। प्लास्टिक मल्चिंग: जब खेत में लगाए गए पौधों की जमीन को चारों तरफ से क्वालिटी प्लास्टिक फिल्म द्वारा अच्छी तरह ढक दिया जाता है, तो इस विधि को प्लास्टिक मल्चिंग कहा जाता है। इस तरह पौधों की सुरक्षा होती है और फसल उत्पादन भी बढ़ता है।

- ❖ पौध से पौध की दूरी : ४५ सेंटीमीटर
- ❖ बेड से बेड की दूरी : १ – ५ फुट
- ❖ प्रति एकड़ पौधे : १७००० – २००००

➢ प्लास्टिक मल्चिंग विधि से लाभ

- खेत में पानी की नमी को बनाए रखती है, साथ ही वाष्पीकरण रोकती है।
- खेत में मिट्टी के कटाव को भी रोकती है।
- खरपतवार से बचाव करती है।
- बागवानी में खरपतवार नियंत्रण और पौधों को लम्बे समय तक सुरक्षित रखती है।
- यह भूमि को कठोर होने से बचाती है।
- पौधों की जड़ों का विकास अच्छी तरह होता है।

➢ क्रॉप कवर के फायदे

- फसलों को ठंडे तापमान से बचाता है।
- पौधों के अच्छे विकास और वृद्धि के लिए एक माइक्रो क्लाइमेट बनाता है।
- ऑफ–सीजन के दौरान फसलों को उगाने में मदद करता है।
- कीटनाशक उपयोग को कम करता है कार्बनिक खेती में मदद करता है।
- क्रॉप कवर सीओटू को बनाए रखने में मदद करता है।
- यह पौधों को प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों जैसे बारिश, हवा, ओलावृष्टि आदि से बचाता है।

➢ स्ट्रॉबेरी के पौधों की सिंचाई

स्ट्रॉबेरी के लिए समुचित पानी प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह प्रभावित करता है कि कितना पानी दिया जाना चाहिए और कब दिया जाना चाहिए। इसके लिए आपको स्ट्रॉबेरी के पौधों को नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई की आवश्यकता पानी की उपलब्धता, मौसम, मिट्टी का प्रकार आदि पर निर्भर करेगी। ध्यान दें कि स्ट्रॉबेरी बारिशी पौधा होती है, इसलिए संयम से सिंचाई की जरूरत होती है। स्ट्रॉबेरी के पौधों की सिंचाई ड्रिप या स्प्रिंकल विधि द्वारा की जाती है, इससे पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी प्राप्त हो जाता है। स्ट्रॉबेरी के खेत में नमी बनाये रखने के लिए जरूरत के अनुसार सिंचाई करते रहना चाहिए।

इसकी पहली सिंचाई पौध रोपाई के तुरंत बाद कर दी जाती है, तथा फलो के आने से पहले फव्वारे के माध्यम से सिंचाई करते है। इसके बाद जब पौधों पर फल आ चुके होते है, तब टपक विधि द्वारा पौधों की सिंचाई कर दी जाती है।

➢ खाद प्रबंधन:

स्ट्रॉबेरी की उचित मात्रा में खाद प्रदान करना महत्वपूर्ण है ताकि पौधों को पोषण मिल सके और उनकी विकास अच्छे से हो सके। इसके लिए उपयुक्त खाद जैसे कंपोस्ट, निम्नांकित खाद, निचली गोंद, मट्टी में खाद आदि का उपयोग किया जा सकता है। खाद की मात्रा और समयबद्धता को स्ट्रॉबेरी की खेती की स्थानीय मानदंडों के अनुसार नियंत्रित किया जाना चाहिए।

➢ स्ट्राबेरी के पौधों पर लगने वाले रोग एवं उपचार

स्ट्रॉबेरी के पौधों पर भी कई तरह के रोग देखने को मिल जाते है। यदि इन रोगो की रोकथाम समय पर नहीं की जाती है, तो पैदावार में अधिक प्रभाव देखने को मिलता है। पौधों पर लगने वाले रोग इस प्रकार है जैसे विविल्स झरबेरी, रस भृग, मक्खियाँ चेफर, कीटों में पतंगे, स्ट्रॉबेरी मुकट कीट कण आदि। इन रोगो से पौधों को बचाने के लिए अनेक प्रकार के उपचार किये जाते है, इसमें जड़ रोग के लिए नीम की खली को पौधों की जड़ो में डाला जाता है, पत्ती रोग में पत्ती ब्लाइट, पत्ता स्पॉट और खस्ता फफूंदी आदि का प्रकोप देखने को मिलता है। आप रोग की पहचान कर कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव पौधों पर कर सकते है। बीज उत्पादन से पहले स्ट्रॉबेरी के पौधों की जांच करें और सुरक्षित पौधे ही उगाएं। यदि किसी पौधे पर कीट या रोग होता है, तो उसे नष्ट कर दें। स्ट्रॉबेरी कीटों और रोगों को पहचानें और उनके विरुद्ध सटीक कीटनाशक का उपयोग करें। किसानों के लिए उपलब्ध विभिन्न रसायनिक और जैविक कीटनाशक होते हैं। उचित मात्रा में कीटनाशक का उपयोग करें और निरंतरता को बनाए रखें। कीटनाशकों की खुराक और अनुपालन करने के लिए उत्पाद के निर्माता द्वारा दी गई दिशानिर्देशों का पालन करें। फसल के साथ कीटनाशक संघटन की जांच करते रहें और जरूरत पड़ने पर जल्द से जल्द कार्रवाई करें।

➢ स्ट्रॉबेरी के फलो की तुड़ाई

स्ट्रॉबेरी के पौधों पर लगे फल का रंग जब ७० प्रतिशत तक आकृषक दिखाई देने लगे उस दौरान फलो की तुड़ाई कर ली जाती है। इसके फलो की तुड़ाई अलग–अलग दिनों में की जाती है। फलो की तुड़ाई के समय उन्हें कुछ दूरी पर डंडी के साथ तोड़ना होता है। ताकि फलो में हाथ न लगे। इसके बाद फलो की पैकिंग प्लास्टिक की प्लेटो में करना काफी अच्छा होता है। पैकिंग के पश्चात् उन्हें हवादार जगह पर रखना होता है, जहा का तापमान ५ डिग्री के आसपास होना चाहिए।

➢ स्ट्रॉबेरी की पैदावार और लाभ

स्ट्रॉबेरी की अलग–अलग किस्मों से भिन्न–भिन्न पैदावार प्राप्त होती है। सामान्य तौर पर इसके एक पेड़ से ८०० से ६०० फल प्राप्त हो जाते

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

है। जिससे किसान भाई को एक एकड़ के खेत से ८० से १०० क्विंटल का उत्पादन प्राप्त हो जाता है। स्ट्रॉबेरी का बाजारी भाव ३०० से ६०० प्रति किलो तक होता है।

लाभः स्ट्रॉबेरी की खेती करने के कई लाभ होते हैं।

- ✓ उच्च मूल्यवान उत्पादनः स्ट्रॉबेरी एक मूल्यवान फल है और इसका दराजदार और स्वादिष्ट आकर्षण अन्य उत्पादों से अलग होता है। इसके चलते, स्ट्रॉबेरी की खेती से अच्छी मुनाफा कमाया जा सकता है।
- ✓ व्यापक बाजारः स्ट्रॉबेरी एक लोकप्रिय फल है और इसकी मांग व्यापक बाजार में होती है। यह उत्पाद स्थानीय बाजारों, सुपरमार्केटों, होटलों, रेस्तरां और निर्यात के लिए भी बढ़ती मांग का एक अच्छा स्रोत हो सकता है।
- ✓ कम समय में उत्पादनः स्ट्रॉबेरी की खेती का उत्पादन समय के मुख्य ग्रिष्मकालीन दिनों में होता है। इसका मतलब है कि आप एक फसल को तैयार करने के लिए कम समय में मुनाफा कमा सकते हैं।

➢ लो टनल का उपयोग

पाली हाउस नहीं होने की अवस्था में किसान भाई स्ट्रॉबेरी को पाले से बचाने के लिए नॉन वूवन क्रॉप कवर को टनल बनाकर इसका उपयोग कर सकते हैं। नॉन वूवन क्रॉप कवर का टनल बनाने के लिए फायबर स्टिक को १० से १२ फिट का अंतर रखकर एग्री थ्रेड से तीनों साइड बांधें और फिर इसके ऊपर नॉन वूवन क्रॉप कवर को लगायें फिर इसके ऊपर प्लास्टिक क्लिप को फायबर स्टिक लगायें जिससे क्रॉप कवर की मजबूती अच्छी रहती है और एक लो–टनल जैसा स्ट्रक्चर बना सकते हैं।

➢ निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में स्ट्रॉबेरी की खेती की भविष्य की संभावनाएं आशाजनक हैं। स्ट्रॉबेरी की खेती ने हाल के वर्षों में अपनी उच्च लाभप्रदता और बाजार में बढ़ती मांग के कारण लोकप्रियता हासिल की है। अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ और उपयुक्त भूमि की उपलब्धता उत्तर प्रदेश को स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए एक आदर्श क्षेत्र बनाती है। स्ट्रॉबेरी बारहमासी पौधे हैं जिन्हें थोड़ा अम्लीय पीएच के साथ अच्छी तरह से सूखा मिट्टी की आवश्यकता होती है। वे ठंडे तापमान में पनपते हैं और उन्हें पर्याप्त मात्रा में धूप की आवश्यकता होती है। उत्तर प्रदेश विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में उपयुक्त जलवायु परिस्थितियाँ प्रदान करता है, जो स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए अनुकूल हैं।

स्ट्रॉबेरी के कई स्वास्थ्य लाभों और विभिन्न पाक अनुप्रयोगों में उनके बहुमुखी उपयोग के कारण बाजार में मांग बढ़ रही है। स्ट्रॉबेरी एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन और खनिजों से भरपूर होती है, जो उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के बीच एक लोकप्रिय विकल्प बनाती है। ताजा स्ट्रॉबेरी के साथ–साथ प्रसंस्कृत स्ट्रॉबेरी उत्पाद जैसे जैम, जेली और डेसर्ट की मांग लगातार बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश में स्ट्रॉबेरी की खेती से किसानों के लिए पर्याप्त आय उत्पन्न करने की क्षमता है। यह एक उच्च मूल्य वाली फसल है जिसमें पारंपरिक फसलों

की तुलना में अपेक्षाकृत कम भूमि की आवश्यकता होती है, और यह प्रति इकाई क्षेत्र में उच्च रिटर्न प्रदान करती है। उचित योजना, कुशल उत्पादन तकनीक और बाजार तक पहुंच के साथ किसान स्ट्रॉबेरी की खेती से अपने लाभ को अधिकतम कर सकते हैं।

सफल खेती सुनिश्चित करने के लिए, किसान हाइड्रोपोनिक्स या ग्रीनहाउस खेती जैसी आधुनिक तकनीकों को अपना सकते हैं, जो पर्यावरणीय कारकों पर बेहतर नियंत्रण प्रदान करती हैं और उत्पादन का अनुकूलन करती हैं। इन तरीकों से साल भर खेती की जा सकती है, जिससे किसानों को ऑफ–सीजन के दौरान स्ट्रॉबेरी की आपूर्ति करने में मदद मिलती है, जब कीमतें अधिक होती हैं। विभिन्न कृषि योजनाओं और सब्सिडी के माध्यम से सरकारी सहायता उत्तर प्रदेश में स्ट्रॉबेरी की खेती की व्यवहार्यता को और बढ़ाती है। किसान सरकारी पहलों के माध्यम से वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और उन्नत किस्मों तक पहुंच प्राप्त कर सकते हैं, जो इस उद्यम में उनकी सफलता में योगदान कर सकते हैं।

अंत में, उत्तर प्रदेश में स्ट्रॉबेरी की खेती का भविष्य आशाजनक दिखता है। अनुकूल जलवायु परिस्थितियां, बाजार की बढ़ती मांग और अधिक लाभ की संभावना इसे किसानों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाती हैं। आधुनिक तकनीकों को अपनाकर और सरकारी सहायता का लाभ उठाकर, किसान सफल स्ट्रॉबेरी फार्म स्थापित कर सकते हैं और राज्य में कृषि क्षेत्र के विकास में योगदान कर सकते हैं।